म. ग्रं. सं. ठाणें
विषय काव्य
सं. नं. ११८७

नये गीत

मूल्य ८ आना

गीतों की सूची

१	इन्टरनेशनल	हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
	जनता का युद्ध	
२	यह जंग है जंगे आज़ादी	मख़दूम मुहीउद्दीन
३	हिन्दी हम चालीस करोड़	शशि बकाया
४	आज़ाद करेंगे हिन्द तुझे आज़ाद	कमल बकाया
५	बढ़े चलो	भारतभूषण अग्रवाल
६	शुरू हुआ जन जंग	शशि बकाया
७	जागरे मज़दूर, जागरे किसान	जौली कौल
८	तुम्हें सौगंध है कय्यूर के उन जाँनिसारों की	अंचल
९	तड़प उठ, ओ घायल बंगाल	मलखानसिंह सिसौदिया
१०	उठरे सिपहिया बाउरे लशकर तेरा कूच	अज्ञात
११	जाग ए हिन्दुस्तान	अली सरदार जाफ़री
	लाल झण्डा	
१२	लाल झण्डा है हमारे हाथ में	मजाज़
१३	लाल निशान	नरेन्द्र शर्मा
१४	लेनिन का वरदान	भारतभूषण अग्रवाल
१५	माँ का आह्वान	शील चतुर्वेदी
१६	सारा संसार हमारा है	सज्जाद ज़हीर
	लाल सेना	
१७	चली जा रही है बढ़ी लाल सेना	शिवमंगलसिंह 'सुमन'
१८	लाल सेना का गीत	सोहनसिंह जोश
१९	लाल फ़ौज	नरेन्द्र शर्मा
२०	बर्लिन अब नज़दीक है	शिवमंगलसिंह 'सुमन'

२१ लेनिन — सज्जाद ज़हीर
२२ नील लहरों के पार — नरेन्द्र शर्मा

बच्चों के गीत

२३ हम लाल हैं भारत माता के — शशि बकाया
२४ हम हिन्दुस्तानी बच्चे — अज्ञात
२५ लाल झण्डा — अज्ञात
२६ पीपलके पीले पत्ते — नागार्जुन
२७ नयी ज़मीन — प्रभाकर माचवे

* * * *

विविध

२८ हुई सुबह, सुबह हुई — भैरवप्रसाद गुप्त
२९ बढ़े चलो — राघव
३० मज़दूरों का गीत — रामविलास शर्मा
३१ स्वतंत्रता दिवस — सुमित्रानन्दन पन्त
३२ भूखा है बंगाल — जौली कौल
३३ अरिको चकना चूर करो — 'शील'

हें पुस्तक / नियतकालिक नवें असल्याकारणानें प्रत्येकास लवकर मिळावे अशी उत्कंठा असते; तरी तें घेतल्यापासून निदान ७/४ दिवसांत परत करण्याची कृपा करावी.

नये गीत

मराठी ग्रंथ संग्रहालय
दा. क्र. १९४३४
ग्रंथ शाखा (स्थळ प्र

१ इन्टरनेशनल

दुनियाके मज़दूरोंका अन्तर्राष्ट्रीय गीत

उठ जाग ओ भूखे बंदी,
अब खींचो लाल तलवार ।
कब तक सहोगे भाई,
ज़ालिम का अत्याचार ।
तुम्हारे रक्तसे रंजित क्रन्दन,
अब दश-दिश लाया रंग ।
ये सौ बरस के बंधन,
एक करेंगे भंग ।
यह अन्तिम जंग [illegible]
जीतेंगे हम एक [illegible] ।
गाओ इंटरनात्स्योनाल,
भव स्वतंत्रताका गान ।
यह अन्तिम जंग है जिसको,
जीतेंगे हम एक साथ ।
गाओ इंटरनात्स्योनाल,
भव स्वतंत्रताका गान ।

—हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

जनताका युद्ध

२ हिन्दी हम चालीस करोड़

हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
देशकी रक्षा करने वाले, देशकी आन पै मरनेवाले;
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
हिन्दू हम हैं, मुस्लिम हम हैं; लाखों हम फ़ौलाद क़दम हैं ।
अभय, असंख्यक, और अगम हैं; यक आवाज़ व यक परचम हैं ।
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
फिर यह सड़ी सरकार हमारी, जुल्मकी करती है तैयारी;
आज मगर है अपनी बारी, जाग उठी है जनता सारी ! अपनी बारी !
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
और उधर बर्बर जापानी, खून के प्यासे, फूटके बानी;
करते आते हैं मनमानी, हमने मगर है दिलमें ठानी,
सुन ले, ऐ बर्बर जापानी !
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
मुल्कमें क़ौमी राज करेंगे, जंग का फ़ौजी साज करेंगे,
दुश्मन को ताराज करेंगे, जो करना है आज करेंगे ।
आज करेंगे, आज करेंगे ।
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
आओ, ऐ हमवतनो, आओ, नेताओंको मुक्त कराओ;
भारत को संयुक्त कराओ; मिलकर सब आवाज़ उठाओ,
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।
हिन्दू हम हैं, मुस्लिम हम हैं; लाखों हम फ़ौलाद क़दम हैं;
आओ, ऐ हमवतनो आओ, मिलकर सब आवाज़ उठाओ;
हिन्दी हम चालीस करोड़ ।

—शशि बकाया

३ आज़ाद करेंगे हिन्द तुझे आज़ाद

आज़ाद करेंगे हिन्द तुझे आज़ाद, आज़ाद।
हम हिन्दी हैं और कुछ भी नहीं;
और कुछ भी नहीं, गर हिन्दी नहीं।
यह हिन्द रहे आबाद! आबाद! आबाद...
आज़ाद करेंगे...

आपस की लड़ाई मिटा देंगे
अज्ञान का पर्दा हटा देंगे
सब मिलके रहेंगे शाद! शाद! शाद!...
आज़ाद करेंगे...

कहने में किसी के न आएँगे,
खुद समझेंगे समझाएँगे,
यह हिन्द रहे आबाद! आबाद! आबाद!...
आज़ाद करेंगे...

तक़दीर के बंधन तोड़ेंगे,
तदबीर से मुँह ना मोड़ेंगे,
फ़रियाद की आदत छोड़ेंगे! फ़रियाद! फ़रियाद!
आज़ाद करेंगे...

—कमला बकाया

४ यह जंग है जंगे आज़ादी

यह जंग है जंगे आज़ादी, आज़ादी के परचमके तले;
हम हिन्द के रहनेवालोंकी, महकूमोंकी, मजबूरों की;
आज़ादी के मतवालों की, दहक़ानों की, मज़दूरों की;

यह जंग है जंगे आज़ादी,
आज़ादी के परचम के तले!

सारा संसार हमारा है, पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन;
हम अफ़रंगी, हम अमरीकी, हम चीनी जाँबाज़ाने वतन;
हम सुर्ख़ सिपाही जुल्म-शिकन, आहन-पैकर फ़ौलाद बदन;

यह जंग है जंगे आज़ादी;
आज़ादी के परचम के तले!

वह जंग ही क्या, वह अमन ही क्या, दुश्मन जिसमें ताराज न हो?
वह दुनिया, दुनिया क्या होगी, जिस दुनियामें स्वराज न हो?
वह आज़ादी, आज़ादी क्या, मज़दूर का जिसमें राज न हो?

यह जंग है जंगे आज़ादी,
आज़ादी के परचम के तले!

लो सुर्ख़ सबेरा आता है, आज़ादी का आज़ादी का!
गुलनार तराना गाता है, आज़ादी का आज़ादी का!
देखो परचम लहराता है, आज़ादी का आज़ादी का!

यह जंग है जंगे आज़ादी,
आज़ादी के परचम के तले!

हम हिन्द के रहनेवालों की, महकूमों की मजबूरों की;
आज़ादी के मतवालों की, दहक़ानों की मज़दूरों की;
यह जंग है जंगे आज़ादी,
आज़ादी के परचम के तले!

—मख़दूम मुहीउद्दीन

५ बढ़े चलो

बढ़े चलो किसान धीर,
बढ़ चलो मजूर वीर;
बढ़ चलो बहादुरो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।
हाथमें निशान लो,
इन्क़लाब गान लो;
पूंजीवदी दुर्ग पर,
चढ़े चलो, चढ़े चलो।

तुम नवीन आग हो,
क्रान्तिके चिराग़ हो;
देशकी स्वतंत्रता की,
नींव तुम गढ़े चलो।
तुम न झुकोगे कभी,
तुम न रुकोगे कभी;
जापानके ख़िलाफ़ तुम,
लड़े चलो, लड़े चलो।

—भारतभूषण अग्रवाल

परचम–झंडा, महकूमों–पराधीन, दहक़ानों–गांववालों, अफ़रंगी–अंग्रेज़, जाँबाज़-जान देनेवाले, जुल्माशिकन-अत्याचारके विरुद्ध लड़ने वाले, आहनपैकर-लोहेका बना हुआ, ताराज–बर्बाद, तराना–गीत, गुलनार–फूलकी भाँति सुंदर।

६ शुरू हुआ जन जंग

शुरू हुआ जन जंग, रंग राजोंका भंग
हुई डंके पै मार, युद्ध की है पुकार।
लाठी बल्लम सम्हाल, उठा हंसिया कुदाल,
तान बर्छी तलवार, हाथ ले हथियार।
आज क़ौमी जिहाद, होंगे हिन्दी आज़ाद,
हिन्दी आज़ाद, होंगे हिन्दी आज़ाद॥
शुरू हुआ जन ... ...
तेरा जौहर प्रचण्ड, तेरा साहस अखण्ड!
सुनके गर्जन गहन, गया दुश्मन सहम,
जैसे आहत पतंग, तैसे ज़ालिमका अंग
शुरू हुआ जन ... ...
छोड़ आहो फ़रियाद, बीती बातोंकी याद,
मिटा आपसकी फूट, बना बंधन अटूट!
आज क़ौमी जिहाद, होंगे हिन्दी आज़ाद,
हिन्दी आज़ाद, होंगे हिन्दी आज़ाद।
शुरू हुआ जन ... ...

—शशि बकाया

७ जागरे मज़दूर, जागरे किसान

जागरे मज़दूर, जागरे किसान
बचा अपना देश, बचा मकान !
आ रहा है लुटेरा जापान,
लुटेरा जापान, लुटेरा जापान !!
लूटा उन्होंने बरमा कोरिया,
लूटा उन्होंने चीन और मालया,
अब चाहता है वह हिन्दुस्तान,
हमारा हिन्दुस्तान !
जागरे मज़दूर ... ...
उठ ऐ बुड्ढे, उठ नौजवान
दिखा दे साहस, दिखा दे शान,
डर जाएगा लुटेरा जापान !
घरों को उन्होंने बिगाड़ा,
खेतों को उन्होंने उजाड़ा,
अब चाहता है वह हिन्दुस्तान,
यह प्यारा हिन्दुस्तान !
जागरे मज़दूर ... ...
एक हो जाओ ऐ हिन्दके चालीस करोड़,
हममें है शक्ति, इतना ज़ोर
भाग जाएगा लुटेरा जापान !
आज़ाद होंगे बरमा कोरिया
आज़ाद होंगे चीन और मालया
आज़ाद हो जाएगा हिन्दुस्तान !
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान
जागरे मज़दूर... ... !!

—जौली कौल

८ तुम्हें सौगंध है कय्यूरके उन जाँनिसारों की !

पड़ी शमशीर दुल्हन-सी छिपी क्यों म्यानमें साथी ?
चला करती क़ज़ाकी छाँह में जिसकी बनी दासी
नहीं दिखती वही सूरज किरन-सी खून की प्यासी
तुम्हें किस सोच ने घेरा, तुम्हें कैसी निराशा-सी
पड़ी शमशीर दुल्हन-सी छिपी क्यों म्यानमें साथी ?
तुम्हारे देशकी सरहद घिरी है आज चोरों से
बहन कहती बचाओ लाज जापानी लुटेरों से
बचानी जान जनताकी तुम्हें इन्सानख़ोरों से
पड़ी शमशीर दुल्हन-सी छिपी क्यों म्यानमें साथी ?
तुम्हें सौगंध अस्मत के रुपहले इन सितारों की
तुम्हें सौगंध है "कय्यूर" के उन जाँनिसारों की
तुम्हें सौगंध अन्धड़ और तूफ़ानी नज़ारों की
पड़ी शमशीर दुल्हन-सी छिपी क्यों म्यानमें साथी ?
चले पगचिन्ह मानव-मुक्तिके रखता तुम्हारा दल
तुम्हारे खून में जागे सतत प्रतिरोधका संबल
रुके विध्वंस की धारा, विजय जनशक्तिकी उज्ज्वल
पड़ी शमशीर दुल्हन-सी छिपी क्यों म्यानमें साथी ?

—'अंचल'

९ तड़प उठ, ओ घायल बंगाल !

हुआ नीला प्रशांत-जल आज, निरीहोंके शोणितसे लाल;
पाट मुर्दोंसे द्वीप अनेक, द्वार पर दानव खड़ा कराल;
निहत्थी जनताका वह खून, तोल कर उतना ही प्रतिशोध;
घृणासे भरी विकट हुंकार, अरे पीड़ित मानवके क्रोध;
उबल रे उबल, उगल दे ज्वाल !

कमर टूटी यदि खोया कटक, गयी लंका तो टूटे पाँव;
चतुरता, दृढ़ताका संग्राम, चलेगा नहीं धूर्तका दाँव,
ब्रह्मनद, गंगाके जलयान, शैलके, अंचलके, वे ग्राम,
शिखर, जंगल, दलदल प्रत्येक, विजयका दुर्ग फूसका धाम;
कौन सकता जन-मोर्चा टाल ?

पूर्वी गिरि-शृंगोंसे पूर्व, दूर तक पहुँचे जहाँ निगाह,
उमड़ती सागर-सी जन-सैन्य, तोड़ती दुश्मनका उत्साह;
डुबोती बेड़ा, सेना, साज़, मिटाती उसका नाम निशान ;
ढहाती साम्राज्योंकी नींव, विश्वका करके नव-निर्माण;
श्रेय ले उसका, ओ बंगाल !

मीर जाफ़रका काला दाग़, खूनसे धुलकर होगा लाल;
नहीं अब सह सकता है देश, दासताके औ' दो सौ साल;
सुदृढ़ पूरबका सिंहद्वार, झेल सकता झोंके विकराल,
देशका केन्द्रित सारा ज़ोर, तने मुक्केसा तू बंगाल ;
बुला दे फ़ासिस्टोंका काल !

देशकी आशाओंका द्वार, चीनकी रक्षाका यह द्वार,
एशिया भरका मुक्तिद्वार, नहीं टूटेगा पहली बार ,
मुक्त मानवताके शुभ गीत, विश्व-कवि गाते रहे महान्
पूत प्रारम्भ उसीका आज, करेगा तेरा यह बलिदान !
गरज रे गरज, सिंह विकराल !
तड़प उठ, ओ घायल बंगाल !

—मलखानसिंह सिसौदिया

१० उठरे सिपहिया बाउरे लशकर तेरा कूच !

बगलमें लटका तीर कमान,
ले तलवार और ढाल जवान,
लाल फुरैरा तेरा निशान,
इससे ही तेरी पहचान।
मान हमारा कहना मान,
कूच का उठ कर ले सामान।
अबके रणमें है खलियान,
उठरे सिपहिया बाउरे लशकर तेरा कूच!
लड़न मरण की रेखा देख,
देखन की जो देखा-देख,
और की अग्नि से हाथ न सेक,
जगमें उठ, चिंगारी फेंक।
तू ही अग्नि, तू ही मेघ,
मत रह तू अपने से अजान।
कूचका उठ कर ले सामान,
उठरे सिपहिया बाउरे लशकर तेरा कूच!
घोर गरज कै बादल उमड़े,
मज़दूरन के हैं दल उमड़े।
घोड़े मोटर पैदल उमड़े,
पर्वत छाए जंगल उमड़े।
मरते कटते पल-पल उमड़े,
क्रान्ति के वाहक उड़े विमान!
कूचका उठ कर ले सामान,
उठरे सिपहिया बाउरे लशकर तेरा कूच!

दा. क्र. १८४३४

११ जाग, ए हिन्दुस्तान

जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !
रूसी जागे, चीनी जागे, जाग ए हिन्दुस्तान !
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन उठा है तूफ़ान
उठा है तूफ़ान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !
चौड़े चकले तेरे दरिया गहरी तेरी वादी
ऊंची तेरे-कोह की चोटी ऊंची तेरी शान
ऊंची तेरी शान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !
तेरे समन्दर का हर क़तरा पाक है जैसे मोती
तेरे साहिल की नुज़हत पर जन्नत भी कुर्बान
जन्नत भी कुर्बान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !
गंगा जमनी तेरे मैदां धानी तेरे खेत
फिर भी नंगे भूखे रह कर जीते हैं दहक़ान
जीते हैं दहक़ान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !
तेरी सरहद पर बैठे हैं डाकू और लुटेरे
इस जन्नत में घुस आया है फ़ासिस्ती शैतान

फ़ासिस्ती शैतान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !

सारी दुनिया देख रही है आज़ादीके ख़्वाब
ज़ंजीरों को तोड़ रहे हैं मज़दूर और किसान
मज़दूर और किसान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !

डूब रहे हैं सदियों लम्बी रातके फीके तारे
सुर्ख सितारा बन कर चमका सुबहे नौ का निशान
सुबहे नौ का निशान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !

यों तो जहां की ख़ाक से उठे मुस्लेह भी और रहबर भी
यह वो सदी है जिसमें आया लेनिन सा इन्सान
लेनिन सा इन्सान
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !

तेरी कूवत तेरी शकती कौन है वह जो रोके
चढ़ता दरिया, बहता धारा, उठता हुआ तूफ़ान !
उठता हुआ तूफ़ान !
जाग, ए हिन्दुस्तान !
ए फ़िरदोस निशान !

--अली सरदार जाफ़री

फिरदोस–स्वर्ग, वादी–तराई, कोह–पर्वत, क़तरा–बूंद, पाक–पवित्र, साहिल–किनारा, नुज़हत–सौंदर्य, दहक़ान–गांवके लोग, ख़्वाब–स्वप्न, सुबहे नौ–नया सबेरा, मुस्लेह–सुधारक, रहबर–रास्ता दिखलाने वाले, कूवत–ताक़त ।

लाल झण्डा

१२ लाल झण्डा है हमारे हाथ में

शेर हैं चलते हैं दर्राते हुए,
बादलों की तरह मंडलाते हुए,
ज़िन्दगी की रागिनी गाते हुए।
लाल झण्डा है हमारे हाथ में ॥

हां यह सच है भूखसे हैरान हैं,
पर यह मत समझो कि हम बेजान हैं,
इस बुरी हालत में भी तूफ़ान हैं,
लाल झण्डा है हमारे हाथ में ॥

हम हैं वह जो बेरुखी करते नहीं,
हम हैं वह जो मौत से डरते नहीं,
हम हैं वह जो मरके भी मरते नहीं।
लाल झण्डा है हमारे हाथ में ॥

चैन से महलों में हम रहते नहीं,
ऐश की गंगा में हम बहते नहीं,
भेद दुश्मन से कभी कहते नहीं।
लाल झण्डा है हमारे हाथ में

जानते हैं एक लश्कर आएगा,
तोप दिखलाकर हमें धमकाएगा।
पर यह झण्डा भी योंही लहराएगा
लाल झण्डा ह हमारे हाथ में ॥

कब भला धमकी से घबराते हैं हम,
दिल में जो होता है कह जाते हैं हम,
आसमाँ हिलता है जो गाते हैं हम।
लाल झण्डा है हमारे हाथमें ॥

लाख लश्कर आये कब हिलते हैं हम,
आंधियोंमें जंगली खिलते हैं हम,
मौत से हँसकर गले मिलते हैं हम।
लाल झण्डा है हमारे हाथ में ॥

मजाज़

१३ लाल निशान

खोलो लाल निशान !
हो सब माल जहान !
खोलो लाल निशान !

दुनियाके मज़दूरों आओ,
सब मिल दलबल से छाजाओ !
खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, धरती के चारों कोने गिन,
घेरो दुश्मन को, घिर आओ, उमड़ समंदर-से लहराओ !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

ऊँच-नीच का भेद ग़लत है, क्या है अमीरी, क्या गुरबत है,
वह आज़ाद समाज बनाओ, सभी जिओ सब ही सुख पाओ !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

आओ सब मेहनतकश साथी, लिये हथौड़ा और दराँती,
जो मेहनत से पैदा करते, मालिक हैं वह दुनिया भर के !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

जल जंगल औ आसमान क्या, सब कुछ इन्सानों के बसमें,
एक बार बस मिल भर जाओ, एक खून सब की नस नस में !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

आओ भूखे-टूटे आओ, आओ भूखे-नंगे आओ,
देखो बदल रही है दुनिया, अपनी नयी बनाओ दुनिया !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

जाय रोग, दुख-दर्द कसाला, ज़ोरो-जुल्म का हो मुँह काला,
बेकारी के घर पर ताला, मुफ्तख़ोर को देश-निकाला !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

इन्क़लाब की सेना में तो, अदना दुनिया का रखवाला,
निधड़क आगे बढ़ आएगा, वह, जैसे लोहेका भाला !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

प्राणों से प्यारा निशान यह, इसका रंग न होगा फीका,
इसके नीचे जो आएगा, देगा लोहू दिल-देही का !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

यह झण्डा सब पर छा जाए, ऊँचा ही ऊँचा फहराये,
ऊपर लाल सितारा झलमल, नीचे खड़ा सर्वहारा-दल !

खोलो लाल निशान !
हो सब लाल जहान !

—नरेन्द्र शर्मा

१४ लेनिन का वरदान

हमारा प्यारा लाल निशान
लेनिन का वरदान।
हमारा प्यारा लाल निशान!
आओ दुनिया के मज़दूरो,
आओ भूखे प्यासे शूरो,
आओ, हम सब मिलकर
गायें, इन्क़लाब का गान।
यह हम लोगों की ताक़त है,
यह हम लोगों की इज्ज़त है,
यह हम लोगों की हिम्मत है,
हम लोगों का ज्ञान।
संभलो, संभलो पूंजीशाही,
हम हैं इन्क़लाब के राही,
अपना हक़ पाने को आते
हैं, हम लाल जवान
आज घड़ी आ गयी तुम्हारी,
कर लो मिटने की तैयारी,
मज़लूमों की टोली लड़ने
आ पहुँची मैदान!
बढ़ो क़दम से क़दम मिलाकर,
शोषण की बुनियाद हिलाकर,
आज आख़िरी जंग भाइयो!
हो आज़ाद जहान
हमारा प्यारा लाल निशान

—भारत भूषण अग्रवाल

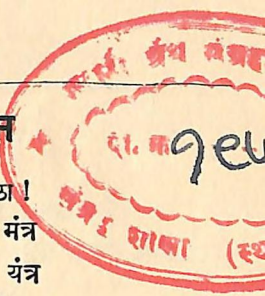

१५ माँ का आह्वान

जनता का लाल निशान उठा !
यह अमर क्रान्ति का महा मंत्र
यह विप्लवकारी महा यंत्र
भर देगा जगमें नव्य ज्योति,
कर देगा वसुधा को स्वतंत्र
सदियों से सोये सतयुग का संचित शाश्वत सम्मान उठा ! !
जनता का लाल निशान उठा !
मिल गयी विश्व को दिव्य दृष्टि
देखें अब सुख से शान्ति-वृष्टि
हो एक तंत्र में सब समष्टि
नव हो जाएगी स्वयं सृष्टि
अभिशापों से लड़-लड़ कर यह होकर विजयी वरदान उठा ! !
जनता का लाल निशान उठा !
हो गया विश्व में यही शोर
है हर दिल में अब यह हिलोर
जनता का दल है लाल कोर
जो छू सकता है क्षितिज छोर
म्रियमाणों के औसान डिगे कैसा विचित्र तूफ़ान उठा ! !
जनता का लाल निशान उठा !
अब शस्त्रहीन का क्या सवाल
अब अस्त्रहीन का क्या सवाल
क्या हिन्दू मुस्लिम ईसाई,
ईमान-दीन का क्या सवाल
जो अपनी मां का बने लाल उसका ही यह आह्वान उठा !

जनताका लाल निशान उठा !
यह इन्क़लाब का परिचायक
मज़दूर–किसानों का नायक
वह अन्तरिक्ष में लहराता
ध्वनि होती गाता है गायक
सेनानी-से सब झूम उठे यह विप्लवकारी गान उठा ! !
जनता का लाल निशान उठा !
भूषा बदली मिट गया वेश
ग़ारत होने जा रहा देश
फ़ासिज्म दे रहा हमें क्लेश
बस 'लाल सितारा' रहा शेष
संगठन करो इसके बल पर बच्चा बच्चा यह मान उठा ! !
जनता का लाल निशान उठा !

—शील चतुर्वेदी

१६ सारा संसार हमारा है

मज़लूमोंने मुल्कों मुल्कों अब झण्डा लाल उठाया है,
जो भूखा था जो नंगा था अब गुस्सा उसको आया है।
रोके तो कोई हमें ज़रा सारा संसार हमारा है,
सारा संसार हमारा है, सारा संसार हमारा है।

हम मेहनतसे मज़दूरीसे धन दौलत पैदा करते हैं,
फिर लाठी गोली खाते हैं और उल्टे भूखों मरते हैं ।
हो ऐसा चौपट राज खतम, सारा संसार हमारा है,
सारा संसार हमारा है सारा संसार हमारा है।

तामीरें हैं, खैरातें हैं, तीरथ और हज भी होते हैं,
यों खूनके धब्बे दामनसे ये दौलतवाले धोते हैं।
क्यों दानके टुकड़े खायें हम, सारा संसार हमारा है
सारा संसार हमारा है, सारा संसार हमारा है।

हम दुनिया नयी बनाएँगे, हम बस्ती नयी बसाएँगे
राजा, अंग्रेज़ों, धनियोंको हम मिलकर मार भगाएँगे।
क्यों परजा राज न हो आखिर, सारा संसार हमारा है,
सारा संसार हमारा है, सारा संसार हमारा है।

—सज्जाद ज़हीर

लाल सेना

१७ चली जा रही है बढ़ी लाल सेना !

तना वक्ष, ज्वालामुखी श्वास में भर
लुटेरों की दुनिया पै बन के बवण्डर
समय की डगर पर, प्रलय के क़दम धर
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

प्रलय के सृजनके सभी साज सज कर
ढहे खंडहरोंका क्षणिक मोह तज कर
विजय वेश, आँखें लगीं रक्त-ध्वज पर
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

युगों की सड़ी रूढ़ियों को कुचलती
ज़हर की लहर सी लहरती मचलती
अँधेरी निशामें मशालों सी जलती
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

कुहू की निशा में उदित पूर्णिमा सी
जिधर डग उधर फट गई कालिमा सी
क्षितिज पै उषा की तरुण लालिमा सी
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

चरण चिन्हमें छोड़ती युग निशानी
नया दिन, नया वेश, नूतन कहानी
चले झूमती ज्यों उमड़ती जवानी
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

समुन्दर उबलते, धरित्री धसकती
गरजती कभी बिजलियों सी चमकती
गरम खून से लाल इतिहास लिखती
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना ।

समाजी विषमता की नींवें मिटाती
ग़रीबों की दुनिया में जीवन जगाती
अमीरों की सोने की लंका जलाती
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना।
लगे गूँजने शोषितोंके तराने
'चले आज हम स्वप्न सच्चे बनाने'
रुकेगी? रुकेगी? कहाँ? कौन जाने?
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना।

—शिवमंगलसिंह 'सुमन'

१८ लाल सेना का गीत

नक्कारे पे डंका लगा है,
तू शस्तर को अपने सँभाल!
शुरू हो गयी है हुरियत की जंग,
अब उठ कोई रास्ता निकाल।
ये तख्तों पे जो ऐंठते हैं,
बढ़ाता है कौन इनका नाम?
ये बन्दूकों बरछी व सब गोलियाँ,
हैं तेरे ही हाथों का काम।
ग़रीबों के घर में तू पैदा हुआ,
है फ़ाका ही तेरा रफ़ीक!
मुसावाते आज़ादीका ले अलम;
लड़ाई का है यह तरीक़।
हैं भूख और बेड़ियाँ तेरे लिए,
तू कब तक रहेगा ग़रीब?
उठा अपना झण्डा सुरख़ तू झुला,
आज़ादीका दिन है क़रीब।

सोहनसिंह जोश

१९ लाल फ़ौज

घर–घर नगर–नगर पर फिर लहराया लाल निशान रे,
पलट पड़ी है लाल फ़ौज हो रही चूर चट्टान रे,
पीछे हटती लाल फ़ौजको देख जो आया ध्यान रे,
तीर धरे डोरी पर जैसे खिंचती चले कमान रे !

पूँजीशाही योरप ने जब पूर्ण पराजय मानली,
ब्रिटिश–राष्ट्र की दुर्बलता भी जब हिटलरने जानली,
यंत्रशक्ति, षड्यन्त्र, संगठन, व्यूहचातुरीके बलपर,
तब हिटलरने लाल रूस से कठिन लड़ाई ठानली !

इस मशीनके महादेवको होता कहाँ गुमान भी,
लाल फ़ौज है कवच, कवच को बेधे ऐसा बान भी,
लोकवाहिनी लाल फ़ौज तो मानवता की आशा है,
आदर्शों की प्रीति, युद्धकी नीति, रीति बलिदान की !

भूखे–नंगे सभी कहीं हैं लाल फ़ौज सब जगह नहीं,
देश देश में श्रमजीवी हैं, लाल रूस हर देश नहीं,
हर दिलमें है आग, संगठित लाल क्रांतिकी आग नहीं,
पर जो जाग उठे जन–जनता, लाल फ़ौज हो सभी कहीं !

लाल फ़ौज जयकार कर रही सुनो सुनो दे कान रे,
पलट पड़े हैं वीर आज, हो रही चूर चट्टान रे,
मरे हुओं में जान फूँकती आती जनता की सेना,
घर–घर नगर–नगर पर फिर फहरादो लाल निशान रे !

—नरेन्द्र शर्मा

२० बर्लिन अब नज़दीक है

फ़ासिस्टों की काल-रात्रिमें घोर घटा घिर आई।
चली लाल सेना ज्यों चलती सावनमें पुरवाई॥
बादल गरजे, बिजली तड़की, भड़के भारी शोले।
आज लालिमा फैल रही है, होना हो सो होले॥

लाल फ़ौज ने लाल खून से आज बनाई भीक है।
मास्को की तो बातें छोड़ो, बर्लिन अब नज़दीक है॥

जब जनगढ़के सिंहद्वार पर बजा युद्धका डंका।
हिटलरकी जर्मनी जल उठी ज्यों सोनेकी लंका॥
देश देशके दलित वर्गके सफल उच्छ्वास।
सातों सागर लगे खौलने, पवन चले उन्चास॥

एक एक शोषित दुनियाका आज हुआ निर्भीक है।
मास्कोकी तो बातें छोडो, बर्लिन अब नजदीक है॥

ऐसा वैसा दुर्ग नहीं यह मजलूमों का प्यारा।
हड्डी की ईंटों से जोड़ा, लगा खूनका गारा॥
प्रबल आँधियाँ, भीषण लहरें आई थी अजमाने।
टक्कर खा खा लौट गयीं पर हिलीं नहीं चट्टानें॥

यह इस युगके संघर्षों का सबसे प्रबल प्रतीक है।
मास्को की तो बातें छोड़ो बर्लिन अब नज़दीक है॥

जन-जन की आशा पर छाया था जो क्षणिक अंधेरा।
उसे चीर कर निकल रहा है देखो लाल सबेरा॥
पद मर्दित राष्ट्रोंने गुंजित की स्वागत की वाणी।
खड़ी जर्मनी की जनता भी करने को अगवानी॥

आज नया हर क़दम, ज़माना नया, नयी तहरीक है।
मास्को की तो बातें छोड़ो, बर्लिन अब नज़दीक है॥

किया सोवियत ने दुनिया की किस्मत का निबटारा।
कहाँ फँसा जाकर, किसने, युगका जुल्मी हत्यारा॥

मज़लूमोंने सिद्ध कर दिया अविजित शक्ति हमारी।
अजि तुम्हारी दुनिया से यह दुनिया बिल्कुल न्यारी॥

फ़ासिस्टों के मर्मस्थलमें लगा निशाना ठीक है।
मास्को की तो बातें छोड़ो, बर्लिन अब नज़दीक है॥

फिरसे आज बुलन्द हुआ नव निर्माणों का नारा।
वह दिन सोचो, जब घर-घर चमकेगा लाल सितारा॥

मेहनतकश की मेहनत होगी जगका एक सहारा।
मुट्ठी बांध कहेंगे हम सब 'सारा विश्व हमारा'॥

इस जागृतिके स्वरमें जन-जन कण-कण आज शरीक है।
मास्को की तो बातें छोड़ो, बर्लिन अब नज़दीक है

—शिवमंगलसिंह 'सुमन'

२१ लेनिन

मुलक रूसमें मनई रहा इक, लेनिन वाका नाम, भइया,
लेनिन वाका नाम,
करके दिखाइस ऊ भइया था, सबसे कठिन जो काम, भइया !
सबसे कठिन जो काम !
परजा रूसकी भूखन मरती, राजा रूसका दुष्ट,
जुलुम की आंधी चलत रही ना सुख था, ना आराम, भइया,
ना सुख था ना आराम !
कूकर जैसे सूखी हड्डी चूसके मोटा होय,
धनपत सारे होवत मोटे, दुबरा होय किसान, भइया,
दुबरा होय किसान !
एक ओर पुलिस के गुर्गे मटकै सीना तान,
दूसर ओर सोदेश के भक्ती, जेलकी रोटी खाएँ, भइया,
जेलकी रोटी खाएँ !
इस अंधियारी रातमें लेनिन, चमका जैसे तारा
रूसके कोने कोने दहका, क्रान्तिका अंगारा, भइया,
क्रान्तिका अंगारा !
युद्ध हुआ और रकत बहा, और संकट पड़ा विशाल,
अन्त में जनता बिजयी होइ गयी, कट गयो सब जंजाल, भइया,
कट गयो सब जंजाल !
ना कोई राजा, ना कोई हाकिम, ना कोई दावेदार,
बाकी बच्यो न पूंजीपति ही, और न साहूकार, भइया !
और न साहुकार
मुलक रूसमें...

—सज्जाद ज़हीर

२२ नील लहरोंके पार

नील लहरोंके पार
नील लहरोंके पार !
लगी है चीन देशमें आग, लगी जो चीन देशमें आग,
बढ़ी आ रही हिन्दकी ओर, जाग रे हिन्दुस्तानी जाग !
कर रहीं दुनिया हाहाकार !
नील लहरोंके पार !
हो रही गोलोंकी बौछार, अगनके गोलोंकी बौछार !
लोग बैठे लपटोंकी छाँह, बह रहा खून, फुँके घर-बार !
शहर सब धुआँ और अंगार !
नील लहरोंके पार !
आज लोहूमें लथपथ प्रान, दरिन्दोंसे लड़ता इन्सान !
इरादा कैसा ?—कड़ी कमान ! तीर-से तीखे हैं अरमान !
बनी आज़ादी तेग़ दुधार !
नील लहरोंके पार !
पसीना और लहूकी बूँद, काट देती लोहेके तार !
वहाँ जन-बच्चोंके अरमान, सह रहे हैं तोपोंकी मार !
उठ खड़े सब बूढ़े बीमार !
नील लहरोंके पार !
आज गिरनेको सिर पर गाज, लगे मँडराने उड़न जहाज़,
जागरे, हिन्दुस्तानी जाग, लगी है चीन देशमें आग,
आग आ पहुँची तेरे द्वार !
नील लहरोंके पार !

नरेन्द्र शर्मा

बच्चों के गीत

२३ हम लाल हैं भारत माता के

बन्दूक उठाने को हैं अभी
कमज़ोर बहुत अपने कन्धे !
पर देश की रक्षा करने को
करते हैं बहुत से हम धन्धे !
शहरों में गांवों गांवों में
हम नाटक करने जाते हैं;
नन्हीं आवाज़ों से गाने
हम देशभक्ति के गाते हैं !
बन्दूक उठाने को.....

यह हिन्दुस्तानी बच्चों को
चीनी बच्चे बतलाते हैं ।
हम गाकर उनसे कहते हैं
सुन लो, अब हम भी आते हैं ।
बन्दूक उठाने को.....
ऐ देश के रहने वालो उठो
जापानसे लड़ने जाओ तुम !
नन्हीं आवाज़ें हैं पीछे,
मत बढ़नेसे घबराओ तुम !
बन्दूक उठाने को.....
सुनलो ए जापानी कुत्तो,
हम लाल हैं भारत माताके !
बन्दूक उठाने को.....

२४ हम हिन्दुस्तानी बच्चे

हम हिन्दुस्तानी बच्चे ।
विश्वासी सीधे सच्चे ॥

जापान का मुँह हम तोड़ेंगे, फासिज्म़ का भण्डा फोड़ेंगे ।
गांधीजी को छुड़वाएँगे, क़ौमी सरकार बनाएँगे ॥
हम हिन्दुस्तानी.....

चलो साथियो साथ हमारे, घूमें चल कर द्वारे द्वारे ।
एके का अब जाल बिछाएँ, घर घर में यह बात सुनाएँ ॥
हम हिन्दुस्तानी.....

छोटे बच्चे साथ तुम्हारे, तुम क्यों सोते पाँव पसारे ?
अब तो जागो प्यारे भाई, देशकी अपने करें भलाई ॥
हम हिन्दुस्तानी.....

माँ–बहिनों की लाज बचाएँ, भारत को आज़ाद कराएँ ।
दुनिया को करके दिखलाएँ, हम हिन्दुस्तानी कैसे ॥

हम हिन्दुस्तानी बच्चे ।
विश्वासी सीधे सच्चे ॥

२५ लाल झण्डा

हम हैं मज़दूरों के बाल,
लिये हाथ में झंडा लाल।
हंसिये का है बना निशान,
और हथौड़ा आलीशान ।
है यह मज़दूरों की आन,
रक्खेगा यह उनका मान ।
नहीं सहेंगे अत्याचार,
हम लड़ने को हैं तैयार ।
माँगेंगे अपने अधिकार,
जीतेंगे सारा संसार ।
हम हैं मज़दूरों के बाल,
लिये हाथ में झण्डा लाल ।

२६ पीपलके पीले पत्ते

खड़ खड़ खड़ खड़ करनेवाले, ओ पीपलके पीले पत्ते
अब न तुम्हारा रहा जमाना शकल पुरानी रंग पुराना
सीख पुरानी ढंग पुराना अब न तुम्हारा रहा जमाना
आज गिरो कल गिरो कि परसों तुमको तो अब गिरना ही है
बदल गई ऋतु, राह देखती लाल लाल पत्तोंकी दुनिया
हरे हरे कुछ भूरे भूरे टूसों से लद रहीं टहनियां
इनका स्वागत करते जाओ
पतझर आया, झरते जाओ
ओ पीपलके पीले पत्ते !

* * *

लाल गुलाबी पत्ते कैसे लह लह लह लहलहा रहे हैं
कैसी सुन्दर रात, चांदकी किरनोंमें ये नहा रहे हैं
छलक रहा इनमें जीवन रस दौड़ रही है इनपर लाली
बुनने लगे आंख खुलते ही ये सुन्दर सपनोंकी जाली
यह इनका युग, ये इनके दिन रहे अन्तकी घड़ियां तुम गिन
हट जाओ, इनको अवसर दो, छोटे हैं, बढ़नेका वर दो
पूर्ण हो रही आयु तुम्हारी, तुम हलके, इनका दिल भारी,
राह रोककर खड़े न होना, झूठमूठके बड़े न होना
सारा श्रेय तुम्हें ही देंगे जीवनभर ये याद रखेंगे
अपने पूर्वजकी उदारता, ओ पीपलके पीले पत्ते !

— नागार्जुन

२७ नई जमीन !

'नई ज़मीन, नई ज़मीन,
पा ली फिरसे वही ज़मीन !'
'हैं अपने जर्नेल जहाँन'
'है तीखी मेरी संगीन'

'दरवाज़े–दरवाज़े पर,
मंजिल–खिड़की-छज्जेपर,
जर्मन–रूसी जहाँ भिड़ा,
एक एकपर अड़ा खड़ा।'
'मौत बन गया खेल नया,
दुश्मन पीछे ठेल दिया।'
'सीना फौलादी चट्टान,
टकराई हिटलर की शान।'

(कोरस) धन्य बहादुर स्तालिनग्राद !
धन्य सिकंदर स्तालिनग्राद!!

'किस्मत क्या है ?' 'हैंडग्रेनेड'
'खुदा ?' 'तनी मुट्ठी, मुठभेड़'
'हम निज पथ–निर्माता हैं।'
'देश पिता है, माता है'
'झुकेगा न माथा सीना।'
'सीखे मानसहित जीना'

'जीना वही कि जो स्वाधीन !
नात्सी एक व रूसी तीन !'
नई ज़मीन, नई ज़मीन !!

'आये थे बनकर गाज़ी
बर्बर आर्यपुत्र (?) नाज़ी,
प्राणोंके सस्ते गाहक
कृषक सताये जो नाहक'
'ताजिक और कज्जाक मिले
उक्रानी, उज़्बेक मिले,'
'मार भगाया वह डाकू,
जो लेने आया बाकू !'

(कोरस) नीप्रोपेत्रोवस्क, विजय !
मास्को, लेनीनिस्क, विजय !!

कलतक जो थे सिर्फ़ मुज़ीक,
आज बनै गये मुखिया ठीक'
'कल ट्रैक्टर जिन हाथोंमें
आज टैंक हैं वे थामे।'
'पिघल चला है बर्फ नया'
'गर्म खून का जो दरिया—
बहा, बहुत है आज खुशी !'
'बढ़े चलो हाँ तवारिशी !'

(कोरस) ओरेल्, नोव्गोराद, विजय !
ॲजोव्, लेनिनग्राद, विजय!!

'झूकोव, गुब्रोव, कूतूज़ोव
'तीमोशेंको, वारिशिलोव,
'हुर्रा लाल फ़ौज मानी,
वाह हमारे सेनानी !'
'कलतक सोवखोज में काम,
स्वस्तिक–खोज करे अब लाम।'
'फर्क न भाई-भाई में
दोस्त आज सब खाईमें—!'

'वतन हमारा दुनिया–दीन !
'कभी न होगी ताक़त क्षीण !
नई ज़मीन, नई ज़मीन !!'

—प्रभाकर माचवे

[लाल दस्तोंका अभिनय करनेवाले बच्चों के लिए यह एक नाट्यगीत है। मुज़ीक–किसान, गँवार; तवारिशी–साथियों, मित्रो; सोवखोज-सोवियत की सामूहिक खेती—ये तीनों रूसी भाषा के शब्द हैं।]

विविध

२८ हुई सुबह, सुबह हुई

(१)

हुई सुबह, सुबह हुई !
जग कि जगी लाल किरण !
लाल क्रान्तिकी किरण !
लाल अग्निकी किरण
छेद घोर आवरण
दामिनी-सी फट पड़ी,
दरक गया आसमान,
दिक्-दिगन्त आँख फाड़
देख आयी रक्त किरण !
जग कि जगी लाल किरण !

(२)

हुई सुबह, सुबह हुई
गा कि गा उठा विहग !
लाल क्रान्तिका विहग !
लाल गीत अग्निके
अग्नि भरे कंठसे
दावा लगाता सा
धरती के जंगलमें
लवरोंमें उड़ता है
लाल अग्निका विहग !
गा कि गा उठा विहग !

(३)

हुई सुबह, सुबह हुई !
चल कि चल रहा पवन !
लाल क्रान्ति का पवन !
लाल इन्क़लाब की
लाल इन्तक़ाम की
लहरें उठाता--सा
धरती के सागर पर !
लाया कुछ लाल ख़बर
लाल अग्नि का पवन !
चल कि चल रहा पवन

(४)

हुई सुबह, सुबह हुई !
बढ़ कि बढ़ी लाल फ़ौज !
लाल क्रान्ति की व फ़ौज !
लाल-लाल नौजवान
लाल रूसियों की शान
लाल हाथ में निशान
लाख-लाख शेरों-से
पिलते वे दुश्मन के
छक्के छुट जाते हैं,
मौत के सिपाही वे
लेनिन की लाल फ़ौज !
बढ़ कि बढ़ी लाल फ़ौज !

—भैरवप्रसाद गुप्त.

२९ बढ़े चलो

बढ़े चलो बढ़े चलो
ये फरफरा उठी हवा
ये खेत लहलहा उठे
ज़िन्दगी की आबरू
पुकार गीत गा उठे—
जिनकी मेहनतों पै
पल रहा है पेट विश्व का
क़दम मिला गरज उठो
बढ़े चलो बढ़े चलो।

गगन में लाल सूर्य है
चमक उठा दमक उठा
कि लाल झण्डा सर उठा
अंधेरे में फहर उठा
महल की रोशनी है मन्द
क्रान्ति है बुला रही—
विजय खड़ी है सामने
बढ़े चलो बढ़े चलो।

करेंगे टुकड़े टुकड़े हम
जो आँधी आज आ रही
कि जिसके अंधकार से
दिशा दिशा है छा रही
कि शोषितों की बाढ़से
महल हैं लड़खड़ा गये
कि बिजलियाँ कड़क उठीं
बढ़े चलो बढ़े चलो।

—रॉ. राघव

३० मज़दूरों का गीत

और बढ़े रफ्तार
चले फिर हाथ ज़रा फुर्ती से
साथी, यह है अपनी जंग
कि अपनी आज़ादी की जंग
कि साथी बढ़ी रहे रफ्तार
और हो माल अधिक तैयार,
बचेंगे तब अपने घरबार
चले जब हाथ ज़रा फुर्ती से,
हाँ हाँ, हाथ ज़रा फुर्ती से
साथी यह है अपनी जंग
कि अपनी आज़ादी की जंग।
कि साथी ढालो यह फौलाद
कि जिससे दुश्मन हो बरबाद
तभी दुश्मन होगा बरबाद,
चले जब हाथ ज़रा फुर्ती से
हाँ हाँ, हाथ ज़रा फुर्ती से
साथी यह है अपनी जंग
कि अपनी आज़ादी की जंग।
यहीं पर हार, यहीं पर जीत,
हमारी हार, हमारी जीत,
कि होगी मज़दूरों की जीत
और पूँजीपतियों की हार,
चले तब हाथ जरा फुर्ती से
साथी यह है अपनी जंग
कि अपनी आज़ादी की जंग।

— रामविलास शर्मा

३१ स्वतंत्रता-दिवस

स्वतंत्रता दिवस मानवता आज मनाने जा रही है
युगोंके बाद जन-स्वतंत्रता,
गीत गाने जा रही है।

युग परिवर्तनके अंधकारमें,
जन क्रांतिके मंदिर-द्वारमें,
जन-स्वातंत्र्यका दीप
जलाने जा रही है।
मानवता आज अब जन-चेतना जगाने जा रही है।

विश्वके इतिहास में
सभ्यता के विकास में
एक महान दृश्य दिखाने जा रही है
मानवता आज, सदियों की
दासता को मिटाने जा रही है।

घूम रहा काल चक्र,
लोक-जीवन के रथ पर बैठी,
आज स्वतंत्रता आ रही है
पास स्वतंत्रता आ रही है।

—सुमित्रानन्दन पन्त

३२ भूखा है बंगाल

पूरब देशमें डुग्गी बाजी फैला सुखका काल
दुखकी अगनी कौन बुझाए सूख गए सब ताल
जिन हाथोंने मोती रोले आज वही कंगाल रे साथी
भूखा है बंगाल

पीठसे अपने पेट लगाए लाखों उलटे खाट
भीखमँगे से थक-थक कर, उतरे मौतके घाट
जियन मरनके डाँड़े मिलाए बैठे हैं चंडाल रे साथी
भूखा है बंगाल

नद्दी नाला गली डगर पर लाशोंके अम्बार
जानकी ऐसी महँगी शैका उलट गया व्यौपार
मुट्ठी भर चावलसे बढ़कर सस्ता है यह माल रे साथी
भूखा है बंगाल

कोठरियोंमें गांजे बैठे बनिए सारा नाज
सुन्दर नारी भूखकी मारी बेचें घर घर लाज
चौपट नगरी कौन सम्हाले चारों तरफ़ भौंचाल रे साथी
भूखा है बंगाल

पुरखोंने घर-बार लुटाए छोड़के सबका साथ
माएँ रोयें बिलख बिलख कर बच्चे हुए अनाथ
सदा सुहागन विधवा राजे खोले सरके बाल रे साथी
भूखा है बंगाल

अत्ती-पत्ती चबा चबा कर झूझ रहा है देश
मौतने कितने घूँघट मारे बदले सौ सौ भेस
काल विकट फैलाय रहा है बीमारीका जाल रे साथी
भूखा है बंगाल

धरती माताके सीनेमें चोट लगी है कारी
माया कालीके फंदेमें वक्त पड़ा है भारी
अबसे उठ जा नींदके माते देख तो जगका हाल रे साथी
भूखा है बंगाल

—जौली कौल

३३ अरि को चकनाचूर करो

युवको ! आज प्रश्न सम्मुख है जीवन और जवानी का,
आज़ादी पर होने वाली अब तक की कुर्बानी का।

आज प्रश्न है होने वाले घातों-प्रत्याघातों का,
दलित देश दुखिया जननी के अविरल अश्रुपातों का।

दो सौ वर्षोंसे जकड़े हैं, निष्ठुर गुलामी के बन्धन,
किन्तु, यहां कायर रहते हैं, छाती पर धर कर पाहन।

यहां नित्य ही परवशता में कटते गले ग़रीबों के,
और बेबसी के मज़ार पर उड़ते गीध नसीबों के।

कोमल उर मसले जाते हैं होती राख कलाओं की,
लूटी जाती दाने दाने पर इज्जत अबलाओं की।

दूध बिना शिशु मरते रहते, कुत्ते मालपुआ खाते,
बदनसीब लाशों के ऊपर निर्मित भवन किये जाते।

विकल भूख से सुलग रही है मनुकी रक्तहीन काया
क्रूर प्रेतसी खड़ी हुई है किस विभीषिका की छाया।
भस्मसात हो रही निरन्तर आज मनुजता बेचारी,
नाजुक समय, नपुंसक छोड़ो अब तो अपनी लाचारी।

कायरता से काम चलेगा ? निर्णय नहीं जवानों का
आज़ादी पर मिटनेवालों, मौक़ा है बलिदानों का।
आज शत्रु घर में घुस आया, बजा रहा है रण भेरी,
चलो एक हो हिन्दू मुस्लिम, बढ़ने में कैसी देरी ?

करते यदि रक्षा परदेशी, होती भला तबाही क्यों ?
होती आज देश, जनतापर, तोजीकी मनचाही क्यों ?

नृशंसता के शत्रु यहां पर बन्द न जेलों में होते,
महामृत्यु से लड़ने वाले यहां न जन जीवन खोते।
इसी लिये है प्रश्न सामने, मौत और आज़ादी का,
जन रक्षा के साथ प्रश्न है दुश्मन की बरबादीका!
मेटो मन का भरम, जवानों! प्राणों की ममता छोड़ो,
फासिस्टों की गरदन मोड़ो कड़ी गुलामी की तोड़ो।
तुम्हें शपथ है विश्व-वंदिता प्यारी भारत माता की,
तुम्हें शपथ है दूध-रक्त की, जग-जन-जनक विधाता की
तुम्हें शपथ है आज़ादी की दूर गुलामी दूर करो,
महामहिम मानव की जय हो, अरिको चकनाचूर करो।

—'शील'

परिचय

१ हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय—श्रीमती सरोजिनी नायडूके भाई; हिन्दी, अंग्रेज़ी और बंगाली, तीन भाषाओंमें कविता लिखते हैं। आपके कितने ही गीत राष्ट्रीय आन्दोलन के अंग बन गये हैं।

२ भारत भूषण अग्रवाल—कलकत्तेके नवयुवक कवि; "छवि के बंधन" और "जागते रहो" नामक गीत-संग्रहके रचयिता।

३ शशि बकाया—बम्बई सेवियत-मित्र संघके उत्साही संगठनकर्त्ता। आप पंजाबी हैं और अपने गीतोंको स्वयं बहुत सुन्दर ढंग से गाते हैं।

४ कमल बकाया—पंजाब के एक सभ्रांत घराने की महिला। कवि शशि बकाया की माँ।

५ मख़दूम मुहीउद्दीन—उर्दूके क्रान्तिकारी कवियोंमें मख़दूमका स्थान बहुत ऊँचा है। कालिज की प्रोफेसरी छोड़कर अब आप अपना सारा समय मज़दूर-संगठनमें लगाते हैं।

६ जौली कौल—प्रतिभाशाली काश्मीरी युवक। आजकल कलकत्तेके जूट मज़दूरोंमें संगठनका काम करते हैं।

७ अंचल—हिन्दी के प्रमुख प्रगतिशील कवि। "मधूलिका", "अपराजिता," "किरण-बेला" और "करील" आदि कविता-पुस्तकों के रचयिता।

८ मलखानसिंह सिसौदिया—आगरा-निवासी। एक नये किन्तु अति योग्य कवि।

९ अली सरदार जाफ़री—कम्युनिस्ट पार्टी के उर्दू अख़बार, "क़ौमी जंग"के सहकारी संपादक। कविताओं के अलावा आप कई नाटक भी लिख चुके हैं।

१० मजाज़—"आहंग" के प्रसिद्ध कवि। उर्दू कविताकी प्रगतिशील धारा के नेताओं में आपका स्थान है।

११ शील चतुर्वेदी—झांसी के प्रगतिशील, होनहार नवयुवक कवि जिनकी कला दिनपर दिन निखर रही है।

१२ नरेन्द्र शर्मा—"प्रभातफेरी", "प्रवासी के गीत", "पलाशवन", "लाल निशान" और "फूल और मिट्टी" आदि कविता-संग्रहों के रचयिता।

हिन्दी के नवयुवक कवियों में आपका स्थान सबसे आगे की पंक्ति में है। आजकल बम्बई टाकीज़ के लिए गीत लिखते हैं।

१३ सज्जाद ज़हीर—अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के प्रधान मन्त्री; देश के प्रमुख कम्युनिस्ट नेता।

१४ सोहनसिंह जोश—सिख किसानों के कम्युनिस्ट नेता। उर्दू और गुरुमुखी दोनोंमें लिखते हैं।

१५ शिवमंगल सिंह 'सुमन'—"कल्लोल" और "जीवन के गान" के रचयिता और प्रसिद्ध नवयुवक कवि। इस युगकी सर्वश्रेष्ट कविता "मॉस्को अब भी दूर है" के कवि।

१६ भैरव प्रसाद गुप्त—कानपूर-निवासी। आपकी कविताएँ अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। इस गीतमें उन्होंने एक नयी टेकनीक का प्रयोग किया है।

१७ राघव—आगरा के प्रतिभाशाली युवक कवि।

१८ डॉ. रामविलास शर्मा—हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक युक्तप्रान्तीय प्रगतिशील लेखक संघ के मंत्री, 'हंस' के कविता-विभाग के सम्पादक।

१९ सुमित्रानन्दन पन्त:—हिन्दी साहित्य के युग-प्रवर्तक कवि। प्रसाद और निराला की तरह हिन्दी साहित्य को सुन्दर शब्द-विन्यास तथा मुक्त और मधुर शैली प्रदान करनेवाले।

२० नागार्जुनजी—प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु और लेखक और कवी हैं। उनकी कविताएँ 'यात्री' के नाम से निकला करती हैं। आजकल हैदराबाद सिंध से "क़ौमी बोली" का सम्पादन कर रहे हैं।

२१ प्रभाकर माचवे—हिन्दी और मराठीके तरुण लेखक और कवी हैं। निबन्ध, छोटे नाटक और कविताएँ वे सभी लिखते हैं। आजकल उज्जैन के माधव कालेजमें प्रोफेसर हैं।

मुद्रक:—शरफ अतहर अली, न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, १९० बी, खेतवाडी मेनरोड, बम्बई ४. **प्रकाशक**:—शरफ अतहर अली, 'जन-प्रकाशन गृह' (पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस), राजभवन, सैण्डहर्स्ट रोड, बम्बई ४.

१९५३५